IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुजफ्फरपुर जिले में मुरौल ब्लाक के राजकिय प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों एवं छात्राओं की विद्यालय सम्बंधी समस्याओं का अध्ययन।

¼1½ Dr. SHAMBHU KUMAR (2) MURARI RAY (3) SUNANDA (4) DHEERAJ KUMAR (5) RAHUL KUMAR (6) RISHAV KUMAR (7) BHUSHAN KUMAR

(1) Research Scholar

Department of Geography

B.R.A. Bihar University Muzaffarpur

Abstract:- नवजात शिशु असहाय तथा असामजिक होता है वह न बोलना जानता है न चलना फिरना। उसे समाज के रीति रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नही होता न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण उसका जहाँ एक ओर शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वहां दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती है। परिणामस्वरूप वह शनैः–शनैः प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलातापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है। इस प्रकार हम देखते है कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्त्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आश्यकता है। शिक्षा कोई नई धारणा नही है। यह उतनी ही पुरानी है जितनी की मानव जाति। पृथ्वी पर मानव जाति के उद्‌गम के साथ हो गया था। इसका महत्व समय के साथ–साथ बढ़ता गया है। ईश्वर ने मानव को कुछ विशिष्ट गुण दिये है जो कि बाकि जीवों, जावनरो में नही होते । शिक्षा मानव के उन्ही गुणों को विकसित करने का एक साधन है जैसे–जैसे मानव का विकास हुआ वैसे–वैसे उसे शिक्षा की आवश्यकता और महत्व का ज्ञापन हुआ। इसलिए उसने यह निश्चित किया कि उसके छात्रों को शिक्षा देने के लिए कोई विशिष्ट स्थान होना चाहिए। शुरू में गुरूकुलो, आश्रमों पेड़ की छाया आदि जगह पर गुरू के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी। परन्तु धीरे–धीरे शिक्षा के लिए एक सुनिश्चित जगह चार दीवारी सुनियोजित कर दी गई जिसे अब स्कूल (विद्यालय) कहा जाता है।

Keywords :– समाज, औपचारिक शिक्षा, बालका और बालिका, मानसिक

अध्ययन क्षेत्र :– मुजफ्फरपुर जिला तिरहुत प्रमंडल एवं जिला का मुख्यालय शहर है। इसके उत्तर में पूर्वी चम्पारण एवं सीतामढ़ी जिला दक्षिण में वैशाली जिला पूरब में दरभंगा एवं समस्तीपुर जिला एवं पष्चिम में गंडक नदी एवं सारण जिला स्थित है। नेपाल की ओर से आने वाली नदियों में प्रायः हर साल आने वाली बाढ़ और भूकंप जैसी भौगौलिक आपदाओ से प्रभावित होता रहा है।

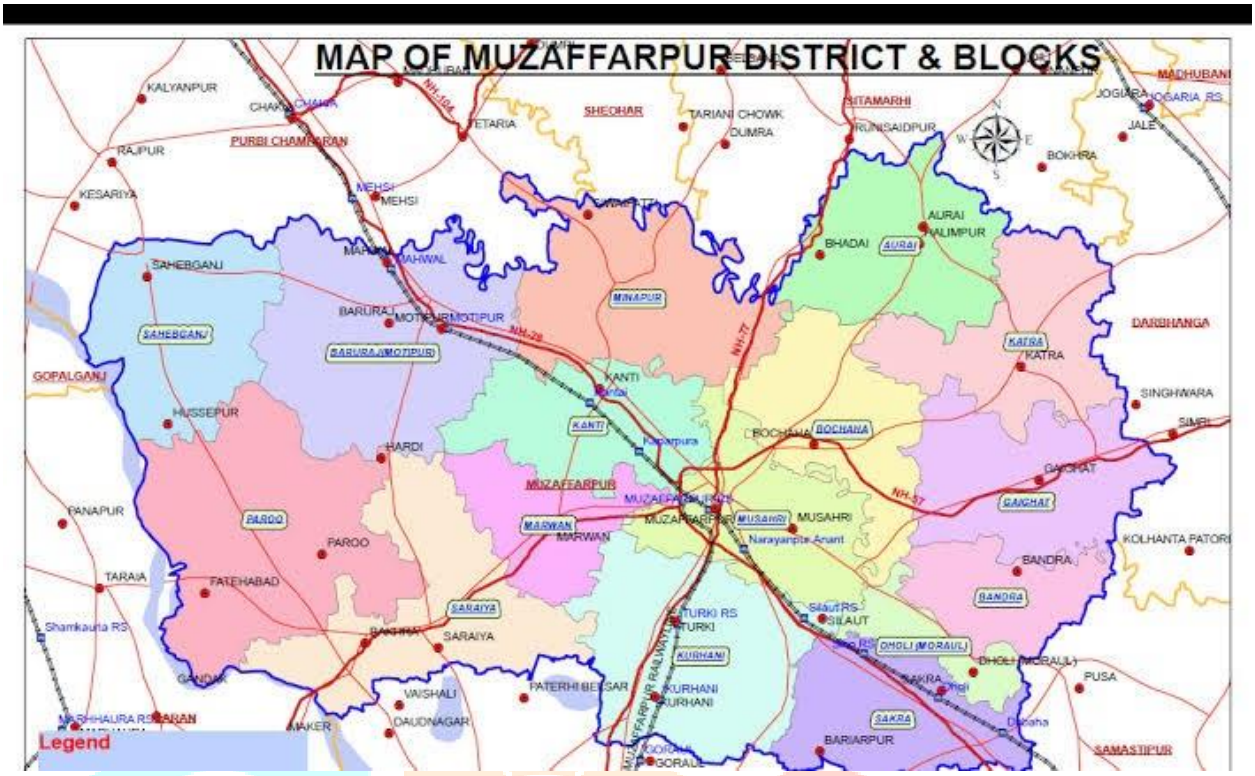

भारत dh प्राथमिक शिक्षा प्रणाली अधिक प्राचीन है। विभिन्न युगो में इसका प्रारूप बदलता है। परन्तु पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नर्सरी तथा किण्डर गार्डन कक्षाओं का आरम्भ आधुनिक शिक्षा प्रणाली की देन है। पूर्व प्राथमिक विद्यालयों मे 2 से 5 वर्ष तक छात्रों को दी जाती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था व्यक्तिगत स्तर पर की विद्यालयों में 6 से 14 वर्ष के लिये आयोजन किया जाता है, उसकी व्यवस्था राज्य तथा स्थानीय संख्याओं द्वारा दी जाती है। शिक्षा को हम दो सोपानों मे विभाजित कर सकते है। 1. स्कूली शिक्षा 2 कॉलेज या विश्वविद्यालय शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

- बालक का शारिरिक तथा मानसिक विकास करना।
- एक अच्छे नागरिक के गुणो का विकास करना।
- आध्यात्मिक तथा नैतिक गुणों का विकास करना।
- बेसिक प्राथमिक शिक्षा प्रणाली 3 एच (हाथ, मस्तिष्क, हृदय) का विकास करना।
- मातृभाषा सम्बन्धी कौशलों का विकास करना।

प्रविधि (Methodologi) :– इस अध्ययन से मुख्य रूप प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोंतो से प्राप्त ऑकड़ो को आधार बनाया गया है और अध्ययन क्षेत्र की सामान्य जानकारी हेतु भौगोलिक अध्ययन की अवलोकन तकनीक अपनायी गयी है। ऑकड़ो को सही रूप मे लाने के लिए आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विधियाँ भी प्रयोग में लाई गई है तथा तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए मानचित्रों एवं आरेखों का भी प्रयोग किया गया है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की समस्याएँ :–

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत दिए गए 14 वर्ष तक की आयु तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास स्वत्रंता प्राप्ति के समय से ही चल रहा है। परन्तु आज तक, आजादी के 63 वर्षो के बाद तक भी हम इन लक्ष्यों को पुरा करने में कुछ बाधाएं है। ये समस्याए ज्यादातर सामान्य है जो कि सभीं विद्यालयों में विद्यमान है और सभी विद्यालयों मे विद्यार्थी इस समस्याओं से गुजरते है।

निष्कर्ष (CONCLUSION) हम कह सकते है कि प्राथमिक विद्यालय में कोई प्रकार की समाज होती है सभी प्रकार के समस्याओं का पता लगाने की कोशिश करें कि किस किस स्कूल में कौन–कौन सी समाज किस तरह से विद्यमान है और सारी समस्या पर विचार विमर्श करना चाहिए और उसका समाधान ढुढ़ना चाहिए। तभी प्राथमिक शिक्षा का विकास संभव हो पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) भूषण एल. आई. (1968) घकितगत कारक एवं नेतृत्व पसंद पी0 एच0 डी0 मनोविज्ञान, भागलपुर विश्वविद्यालय।

(2) घोष, सी.डी. (1980) शिक्षा में शोध का चौथा सर्वेक्षण, खंड द्वितीय, नई दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी.।

(3) कोल लोकेश (1998) शैबिक अनुसंधान की प्रणाली, विकास पब्लिकेशन हाउस शिमला (हिमालय प्रदेश) ।

(4) शर्मा डी0 आर. ए. (2006) शिबा तथा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो मेरठ, उत्तर प्रदेश ।

(5) वर्मा डा0 एस. पी. (2008) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान चौथा संस्करण, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)